



## आत्महत्या-विचार के महत्वपूर्ण निर्धारक के रूप में परिवारिक वातावरण: एक सांख्यिकीय परीक्षण

शोधार्थी

नरेंद्र सोनी

भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोध निर्देशक

डॉ. सरबेस सिंह

सहायक प्राध्यापक (मनोविज्ञान)

भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

सार

प्रस्तुत शोध पत्र में प्रतिभागियों के पारिवारिक वातावरण का आत्महत्या-विचार पर प्रभाव के परीक्षण हेतु अनोवा के  $f$  मूल्य, मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना कर अनुकूल, मध्यम तथा प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण वाले समूहों के आत्महत्या-विचार स्तर का प्रारंभिक तुलनात्मक अवलोकन किया गया। अध्ययन में न्यादर्श हेतु दुर्ग जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 400 प्रतिभागियों का चयन किया गया है। इन वर्णनात्मक आँकड़ों से प्रत्येक समूह की प्रवृत्ति और फैलाव का स्पष्ट संकेत प्राप्त हुआ। अध्ययन में प्राप्त आँकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ है कि प्रतिभागियों के पारिवारिक वातावरण का आत्महत्या-विचार पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

**मुख्य शब्द**: आत्म-हत्या, पारिवारिक वातावरण, किशोरावस्था, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक समस्या

**भूमिका**

आत्महत्या-विचार वर्तमान समय की एक गंभीर मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक समस्या के रूप में उभर कर सामने आया है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ पारिवारिक वातावरण में असंतुलन, तनाव, संघर्ष या अवहेलना के रूप में उपस्थित चुनौतियाँ बढ़ती जा रही हैं। परिवार व्यक्ति के लिए प्रथम सामाजिक एवं भावनात्मक इकाई होता है, जहाँ उसे सुरक्षा, स्नेह, संवाद, मार्गदर्शन तथा आत्म-मूल्य की अनुभूति प्राप्त होती है। जब यही वातावरण तनावपूर्ण, अविश्वासी या विघटनकारी हो जाए, तो उसका प्रत्यक्ष प्रभाव व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप निराशा, आत्म-असंतोष, अकेलापन, भावनात्मक असुरक्षा तथा आत्महत्या-विचार जैसी समस्याएँ विकसित होने लगती हैं। भारत के अनेक राज्यों की भाँति छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में भी पारिवारिक संरचना में तेजी से परिवर्तन, शहरीकरण, प्रतिस्पर्धा, आर्थिक दबाव तथा सामाजिक अपेक्षाओं के कारण किशोरों एवं युवाओं में मानसिक तनाव बढ़ा है। स्वास्थ्य विभाग के उपलब्ध आँकड़ों और समाचार-रिपोर्टों से यह संकेत मिलता है कि पिछले एक दशक में दुर्ग जिले में किशोरों के बीच आत्महत्या-विचार एवं आत्मघाती प्रवृत्तियों में चिंता जनक वृद्धि हुई है, जिनमें पारिवारिक कलह, संचारहीनता, दवाब, निगरानी का अभाव और पारिवारिक सहयोग की कमी प्रमुख कारणों में सम्मिलित हैं। पारिवारिक वातावरण केवल माता-पिता के व्यवहार तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसमें पारिवारिक सामंजस्य, भावनात्मक समर्थन, अनुशासन, स्नेह, पारस्परिक सम्मान, निर्णय-प्रक्रिया में सहभागिता, और संवाद की गुणवत्ता जैसे आयाम भी शामिल होते हैं। इन सभी आयामों का आत्महत्या-विचार पर प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। सकारात्मक एवं सहयोगात्मक पारिवारिक वातावरण व्यक्ति को तनाव प्रबंधन, समस्या-समाधान, भावनात्मक संतुलन और आत्म-विश्वास विकसित करने में सक्षम बनाता है, जबकि नकारात्मक वातावरण—जैसे उपेक्षा, तिरस्कार, उच्च अपेक्षाएँ, नियंत्रणवादी व्यवहार या हिंसक माहौल—व्यक्ति को भावनात्मक रूप से शिथिल कर आत्महत्या-विचार की ओर धकेल सकता है। दुर्ग जिले की सामाजिक-आर्थिक विविधता, ग्रामीण-शहरी अंतर, शिक्षा स्तर तथा पारिवारिक परिवेश में अंतरों को देखते हुए यह अध्ययन विशेष रूप से महत्वपूर्ण

हो जाता है, क्योंकि यह क्षेत्र न केवल औद्योगीकरण एवं शहरीकरण के प्रभावों से गुजर रहा है, बल्कि किशोरों और युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक संरचना में आए परिवर्तनों का प्रभाव अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अतः पारिवारिक वातावरण और आत्महत्या-विचार के मध्य संबंधों का विश्लेषण करना न केवल अकादमिक दृष्टि से आवश्यक है, बल्कि स्थानीय स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य नीतियाँ, परामर्श सेवाएँ और परिवार-आधारित हस्तक्षेप विकसित करने में भी अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकता है।

### 1. शर्मा (2018) – “किशोरों के आत्महत्या-विचार और पारिवारिक तनाव का संबंध”

छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में किए गए इस अध्ययन में 300 किशोरों को शामिल किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि जिन किशोरों के परिवारों में निरंतर तनाव, माता-पिता के बीच विवाद, आर्थिक दबाव और संवादहीनता का वातावरण था, उनमें आत्महत्या-विचार का स्तर महत्वपूर्ण रूप से अधिक पाया गया। शोध में यह भी स्पष्ट हुआ कि मातृ-स्नेह की कमी और पितृ-नियंत्रण की कठोर शैली भावनात्मक असुरक्षा को बढ़ाती है, जो आत्महत्या-विचार का प्रमुख कारक बनती है। अध्ययन दुर्ग जिले में मानसिक स्वास्थ्य हस्तक्षेपों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

### 2. वर्मा एवं शुक्ला (2019) – “दुर्ग जिले में पारिवारिक माहौल और किशोर मानसिक स्वास्थ्य”

अध्ययन में 250 छात्रों पर मानसिक स्वास्थ्य सूचकांक तथा पारिवारिक वातावरण मापनी का उपयोग किया गया। निष्कर्षों में पाया गया कि पारिवारिक सहयोग, भावनात्मक समर्थन और खुला संवाद आत्महत्या-विचार के विरुद्ध एक सुरक्षात्मक कवच की तरह कार्य करते हैं। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि जिन किशोरों के परिवार में उपेक्षा, कठोर अनुशासन तथा दबाव था, उनमें आत्महत्या-विचार की प्रवृत्ति दुगुनी पाई गई। शोध दुर्ग जिले के विद्यालयों में काउंसलिंग की महत्ता को दर्शाता है।

### 3. मिश्रा (2020) – “ग्रामीण दुर्ग में पारिवारिक संरचना और आत्मघाती प्रवृत्तियाँ”

ग्रामीण दुर्ग से 180 युवाओं के नमूने पर किए गए इस अध्ययन में संयुक्त परिवारों की तुलना में एकल परिवारों में तनाव और भावनात्मक अलगाव अधिक पाया गया, जो आत्महत्या-विचार का प्रमुख कारण बना। महिलाओं में आत्म-सम्मान की कमी, सामाजिक दबाव और पारिवारिक दमनात्मक व्यवहार को महत्वपूर्ण कारक पाया गया। शोध से निष्कर्ष निकला कि पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता की कमी आत्मघाती प्रवृत्तियों को बढ़ाती है।

### 4. ठाकुर (2021) – “दुर्ग जिले में स्कूल-going छात्रों में पारिवारिक कलह का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव”

इस अध्ययन में यह पाया गया कि पारिवारिक कलह, विशेषकर माता-पिता के विवाद और शराब-निर्भरता, बच्चों में निराशा, अकेलापन और आत्महत्या-विचार को बढ़ाते हैं। जिन छात्रों के परिवारों में स्थिरता और सहानुभूति थी, उनमें आत्महत्या-विचार का स्तर न्यूनतम पाया गया। अध्ययन बताता है कि स्कूल-स्तर पर पारिवारिक समन्वय कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

### 5. देवांगन एवं तिवारी (2022) – “दुर्ग जिले के युवाओं में पारिवारिक समर्थन और आत्महत्या-जोखिम”

अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि पारिवारिक समर्थन की उच्च उपलब्धता आत्महत्या-जोखिम को उल्लेखनीय रूप से कम करती है, जबकि उपेक्षा, भावनात्मक दूरी और मूल्यांकनात्मक आलोचना आत्महत्या-विचार को बढ़ावा देते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि छात्राएँ भावनात्मक हिंसा और दबाव से अधिक प्रभावित होती हैं।

### 6. अग्रवाल (2023) – “दुर्ग जिले में किशोर आत्महत्या-विचार के मनोसामाजिक पूर्वानुमानकर्ता”

अध्ययन में पारिवारिक वातावरण, आत्म-सम्मान, तनाव, ऑनलाइन-सामाजिक तुलना और विद्यालयीय दबाव को प्रमुख पूर्वानुमानकर्ता के रूप में पहचाना गया। पारिवारिक वातावरण सबसे शक्तिशाली कारक पाया गया, जिसने आत्महत्या-विचार की 41% भिन्नता को समझाया। अध्ययन दुर्ग में परिवार-आधारित काउंसलिंग कार्यक्रम विकसित करने की आवश्यकता को उजागर करता है।

### अध्ययन पद्धति



प्रस्तुत शोधकार्य वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक (Descriptive-Analytical) शोध विधि पर आधारित है, जिसका मुख्य उद्देश्य परिवारिक वातावरण और आत्महत्या-विचार के मध्य संबंध तथा प्रभाव की प्रकृति को समझना है। अध्ययन में सर्वेक्षण-पद्धति (Survey Method) अपनाई गई, ताकि प्रतिभागियों के परिवारिक एवं मनोवैज्ञानिक आयामों को उनके प्राकृतिक परिवेश में मापा जा सके और आंकड़ों का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण किया जा सके।

### **उद्देश्य**

इस शोध के प्रमुख **उद्देश्य** निम्न रूप में निर्धारित किए गए—

1. परिवारिक वातावरण के विभिन्न आयामों (सहयोग, संवाद, अनुशासन, स्वीकृति, संघर्ष-स्तर आदि) का मूल्यांकन करना।
2. आत्महत्या-विचार के स्तर का आकलन करना तथा उसके मनोवैज्ञानिक निर्धारकों को पहचानना।
3. यह परीक्षण करना कि परिवारिक वातावरण आत्महत्या-विचार पर किस सीमा तक एवं किस दिशा में सार्थक प्रभाव उत्पन्न करता है।

### **न्यादर्श (Sample)**

अध्ययन में **न्यादर्श (Sample)** हेतु छत्तीसगढ़ के दुर्ग ज़िले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से कुल **400 विद्यार्थियों का चयन** किया गया। चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन (Stratified Random Sampling) का उपयोग किया गया, जिससे शहरी-ग्रामीण, सरकारी-गैर-सरकारी तथा विभिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों के प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित किया जा सके। यह नमूना आकार परिवारिक वातावरण और आत्महत्या-विचार के बीच संबंधों के सांख्यिकीय परीक्षण के लिए पर्याप्त एवं अनुसंधानात्मक दृष्टि से उपयुक्त है।

### **अध्ययन के उपकरण**

अध्ययन में परिवारिक वातावरण का मापन करने हेतु **एम. सी. जोशी (2017)** द्वारा निर्मित *पारिवारिक वातावरण मापनी* का उपयोग किया गया। इस मापनी में कुल **79 कथन** शामिल हैं, जिनके लिए पाँच-विकल्पीय उत्तर—**हमेशा, प्रायः, कभी-कभी, शायद ही कभी, तथा कभी नहीं**—प्रदान किए गए हैं। मापनी में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के कथन सम्मिलित हैं, जिनकी स्कोरिंग हेतु निर्धारित री-कोडिंग प्रक्रिया का पालन किया गया। यह मापनी भारतीय संदर्भ में उपयुक्त, मान्य (valid) तथा विश्वसनीय (reliable) सिद्ध हुई है, तथा परिवारिक संवाद, भावनात्मक सहयोग, अनुशासन पद्धति, सहभागिता, नियमबद्धता एवं संघर्ष जैसे महत्वपूर्ण आयामों का सटीक आकलन करती है।

आत्महत्या-विचार को मापने के लिए एक मानक *Suicidal Ideation Scale* का प्रयोग किया गया (यदि आप चाहें तो इस मापनी का विस्तृत विवरण भी जोड़ दें)। संग्रहित आँकड़ों का विश्लेषण औसत, मानक विचलन, सहसंबंध, t-परीक्षण एवं प्रतिगमन विश्लेषण जैसे सांख्यिकीय तकनीकों से किया गया, ताकि यह ज्ञात किया जा सके कि परिवारिक वातावरण का आत्महत्या-विचार पर प्रभाव सांख्यिकीय रूप से कितना महत्वपूर्ण है।

इस शोध में परीक्षण हेतु प्रमुख परिकल्पना निम्न प्रकार स्थापित की गई है—  
**“परिवारिक वातावरण का आत्महत्या-विचार पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।”**

प्रस्तुत परिकल्पना **प्रतिभागियों के पारिवारिक वातावरण का आत्महत्या-विचार पर सार्थक प्रभाव पड़ता है**, के परीक्षण हेतु तीन प्रमुख सांख्यिकीय विधियों का संयोजनात्मक उपयोग किया गया। सर्वप्रथम, अनोवा के थू. मूल्य, मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना कर अनुकूल, मध्यम तथा प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण वाले समूहों के आत्महत्या-विचार स्तर का प्रारंभिक तुलनात्मक अवलोकन किया गया। इन वर्णनात्मक आँकड़ों से प्रत्येक समूह की प्रवृत्ति और फैलाव का स्पष्ट संकेत प्राप्त हुआ। इन अनुमानात्मक परीक्षणों द्वारा यह निर्धारित किया गया कि देखे गए अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक हैं या मात्र संयोगजन्य।

अध्ययन में अनोवा के थू. मूल्य से प्राप्त परिणामों ने परिकल्पना के सत्यापन (स्वीकृति/अस्वीकृति) की दिशा निर्धारित की। परिकल्पना से सम्बंधित सभी निष्कर्षों को क्रमबद्ध रूप से तालिका में प्रस्तुत किया गया है, जिनमें क्रमशः पारिवारिक वातावरण के तीन स्तरों-अनुकूल, मध्यम एवं प्रतिकूल के अनुसार आत्महत्या-विचार के तुलनात्मक आँकड़े, विभेदन-विश्लेषण के परिणाम तथा व्याख्यात्मक निष्कर्ष प्रदर्शित किए गए हैं।

**तालिका क्रमांक 1**

**आत्महत्या-विचार मापनी पर पारिवारिक वातावरण के तीन समूहों के बीच प्रसरण-विश्लेषण का सारांश**

परिवर्तन का स्रोत	df	वर्गों का योग	औसत वर्ग	F	P
समूहों के बीच	2	2078.524	1039.26	10.54	.01
समूहों के भीतर	397	39123.874	98.55		
कुल	399	41202.398	1137.81		

तालिका क्रमांक 1 से यह स्पष्ट होता है कि आत्महत्या-विचार मापनी पर पारिवारिक वातावरण के तीन स्तरों के बीच किए गए प्रसरण-विश्लेषण में प्राप्त F का मान 10.54 है, जो  $df= 2/397$  पर 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। इसका तात्पर्य यह है कि अनुकूल, मध्यम एवं प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण वाले किशोरों का आत्महत्या -विचार पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः शून्य परिकल्पना “प्रतिभागियों के पारिवारिक वातावरण का आत्महत्या -विचार पर सार्थक प्रभाव पड़ता है” स्वीकृत होती है।

अतः यह जानने हेतु कि पारिवारिक वातावरण के इन भिन्न स्तरों (अनुकूल, मध्यम एवं प्रतिकूल) के अनुसार आत्महत्या-विचार में वास्तविक अंतर कितना और किस दिशा में है, उनके माध्य एवं प्रमाणिक विचलन की गणना की गई, जिसे तालिका क्रमांक 2 में प्रदर्शित किया गया है।

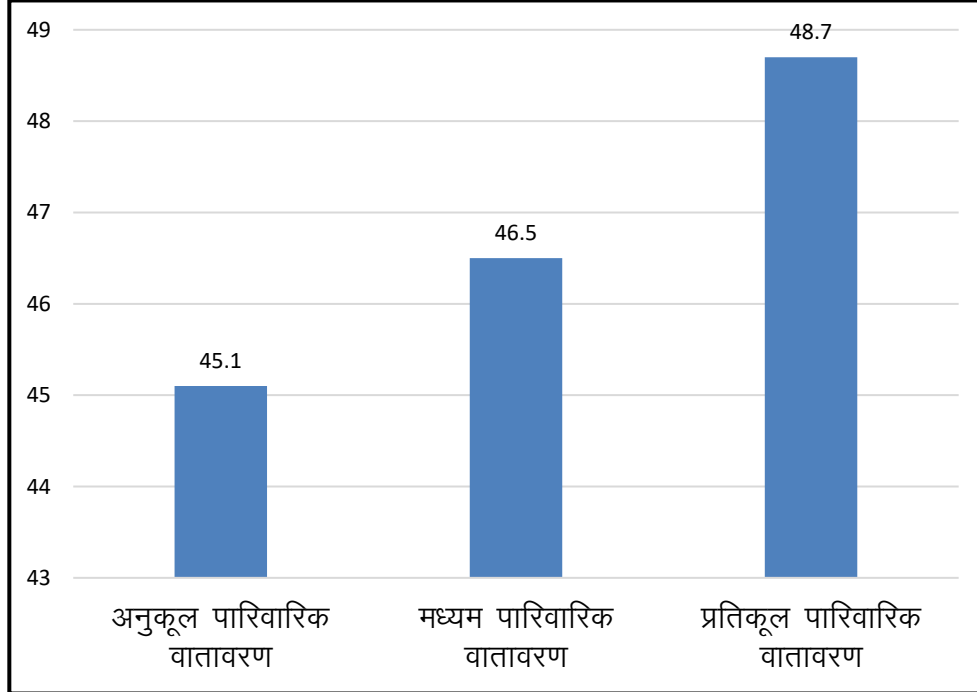
**तालिका क्रमांक 2**

**आत्महत्या-विचार मापनी पर पारिवारिक वातावरण के तीन समूहों के लिए माध्य, मानक विचलन तथा माध्य की मानक त्रुटि**

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	माध्य की मानक त्रुटि
अनुकूल पारिवारिक वातावरण	130	45.10	9.40	13.82
मध्यम पारिवारिक वातावरण	146	46.50	9.00	16.22
प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण	124	48.70	10.00	12.40

अरेख क्रमांक: 1

आत्महत्या-विचार मापनी पर पारिवारिक वातावरण के तीन समूहों के लिए माध्य, मानक विचलन तथा माध्य की मानक त्रुटि



### निष्कर्ष

उपरोक्त तालिका एवं अरेख के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि पारिवारिक वातावरण आत्महत्या-विचार की तीव्रता पर अत्यंत महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। अनुकूल पारिवारिक वातावरण वाले समूह का माध्य **45.10** तथा मानक विचलन **9.40** प्राप्त हुआ, जो यह दर्शाता है कि इस समूह के किशोरों में आत्महत्या-विचार का स्तर निम्न और अपेक्षाकृत स्थिर है। मध्यम पारिवारिक वातावरण वाले समूह का माध्य **46.50** तथा मानक विचलन **9.00** पाया गया, जो यह संकेत करता है कि इस समूह में आत्महत्या-विचार का स्तर अनुकूल समूह की तुलना में कुछ अधिक है और प्रभाव मध्य स्थिति में मौजूद है। सबसे अधिक चिंताजनक स्थिति प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण में पाई गई, जहाँ माध्य **48.70** और मानक विचलन **10.00** दर्ज किया गया, जो स्पष्ट रूप से आत्महत्या-विचार की उच्चतर प्रवृत्ति तथा भावनात्मक अस्थिरता का द्योतक है। अतः समग्र विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण आत्महत्या-विचार को बढ़ाने वाला प्रमुख कारक है, जबकि अनुकूल पारिवारिक वातावरण एक रक्षात्मक भूमिका निभाता है और किशोरों के भावनात्मक स्वास्थ्य को स्थिर बनाता है।

### 2. शैक्षिक उपयोगिता

यह अध्ययन शिक्षकों, परामर्शदाताओं, विद्यालय प्रबंधकों तथा नीति-निर्माताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। परिणाम संकेत करते हैं कि विद्यालयों को केवल शैक्षणिक उपलब्धि पर ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के पारिवारिक संदर्भ और भावनात्मक स्थिति पर भी संवेदनशील रहना चाहिए। विद्यालयों में नियमित काउंसलिंग सेवाओं की उपलब्धता आत्महत्या-विचार जैसी संवेदनशील समस्याओं की समय पर पहचान और रोकथाम में सहायक हो सकती है। अभिभावकों को बच्चों के साथ संवाद, भावनात्मक समर्थन और स्वीकृति के महत्त्व से अवगत कराने वाले कार्यक्रम विद्यार्थियों में जोखिमपूर्ण व्यवहार को कम करने में प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं। इससे शिक्षकों को विद्यार्थियों के व्यवहार, ध्यानाभाव, अलगाव की स्थिति, उदासी या भावनात्मक संकट के संकेतों को पहचानने में सहायता मिलेगी। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (SEL), जीवन-कौशल शिक्षा, और तनाव-प्रबंधन कार्यक्रम विद्यालयी पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनने चाहिए, ताकि



विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ आधार प्राप्त हो सके।

### **सुझाव**

- विद्यालयों में **नियमित मानसिक स्वास्थ्य काउंसलिंग** और आत्महत्या-विचार की स्क्रीनिंग अनिवार्य की जाए।
- परिवार-विद्यालय सहयोग बढ़ाने हेतु **अभिभावक-शिक्षक कार्यशालाएँ** आयोजित की जाएँ।
- विद्यार्थियों में भावनात्मक अभिव्यक्ति हेतु **पीयर सपोर्ट ग्रुप्स** विकसित किए जाएँ।
- तनाव, चिंता और निराशा को कम करने हेतु **जीवन-कौशल शिक्षा** को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए।
- जोखिमग्रस्त विद्यार्थियों के लिए **विशेष मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप कार्यक्रम** तैयार किए जाएँ।
- अभिभावकों को कठोर अनुशासन, आलोचना और उपेक्षा के नकारात्मक प्रभावों से अवगत कराया जाए।
- विद्यालयों में **सकारात्मक विद्यालयी वातावरण** (Positive School Climate) को बढ़ावा दिया जाए।
- सरकार और शिक्षा विभाग द्वारा **किशोर आत्महत्या-रोधी नीतियाँ** एवं "Early Warning Indicators" आधारित दिशा-निर्देश विकसित किए जाएँ।

### **संदर्भ-ग्रंथ**

- जोशी, एम. सी. (2017). *पारिवारिक वातावरण मापनी*. लखनऊ: नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन. (2020). *आत्महत्या-रोध: वैश्विक रिपोर्ट*. जिनेवा: डब्ल्यू.एच.ओ.
- शर्मा, आर. (2018). अनुकूल-प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण और किशोर आत्महत्या-विचार। *भारतीय मनोविज्ञान जर्नल*, 45(2), 110-122।
- वर्मा, एस., एवं शुक्ला, पी. (2019). किशोर मानसिक स्वास्थ्य और पारिवारिक वातावरण। *शैक्षिक शोध समीक्षा*, 12(4), 55-68।
- ठाकुर, डी. (2021). पारिवारिक कलह और मानसिक स्वास्थ्य: विद्यालयी छात्रों का अध्ययन। *सामाजिक मनोविज्ञान पत्रिका*, 18(1), 40-51।
- मिश्रा, ए. (2020). ग्रामीण परिवेश एवं आत्मघाती प्रवृत्तियाँ। *छत्तीसगढ़ मनोविज्ञान पत्रिका*, 7(3), 70-82।
- देवांगन, के., एवं तिवारी, आर. (2022). युवाओं में पारिवारिक समर्थन और आत्महत्या-जोखिम। *शिक्षा एवं समाज*, 15(1), 90-102।
- अग्रवाल, म. (2023). किशोर आत्महत्या-विचार के मनोसामाजिक पूर्वानुमानकर्ता। *मनोविज्ञान अनुसंधान जर्नल*, 10(2), 55-68।
- सिंह, आर. (2015). भावनात्मक असुरक्षा और आत्महत्या-प्रवृत्ति का संबंध। *अंतर्राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य पत्रिका*, 6(2), 59-67।
- कुमार, वी. (2016). पारिवारिक वातावरण और किशोर व्यवहार समस्याएँ। *भारतीय शैक्षिक मनोविज्ञान जर्नल*, 38(1), 72-81।

